Name - Suraj Kumar

College name - Shakuntalam Institute of teacher Education

Sasaram Rohtas (Bihar)

Paper - C4 (B.Ed 1st year)

Date - 12/06/2020

गद्य शिक्षण की विधियाँ एवं प्राविधियाँ / शिक्षण विधि

① → अर्थ बोध शिक्षण – प्राथमिक स्तर पर।

② → प्रश्नोत्तर शिक्षण विधि – माध्यमिक स्तर पर तथा।

③ → व्याख्या शिक्षण विधि – उच्च कक्षाओं के शिक्षण के लिए।

माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षण समस्याओं में प्रश्नोत्तर विधि की ही प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि इसमें छात्र की भी भागीदारी रहती है। अन्तःक्रिया शिक्षण के स्वरूप का सम्पादन होता है।

गद्य-शिक्षण के सम्पादन में इन तीन विधियों को विस्तार पूर्वक समझेंगे :–

① — अर्थ बोध शिक्षण विधि :

इस विधि को उद्बोधन विधि भी कहते हैं।

- इस विधि में कठिन शब्दों का अर्थ बतलाकर विभिन्न विधियों की सहायता के छात्र को उद्बोधित करता है। इसके लिए शिक्षक - प्रत्यक्ष वस्तु प्रदर्शन, प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा प्रतिमान (मॉडल) चित्र, रेखाचित्र द्वारा आदि प्रविधियों की सहायता लेता है।

Ex. – तिरंगा झण्डा का अर्थ समझाने के लिए प्रत्यक्ष रूप में झण्डे को दिखलाता है और समझाता है कि इसमें तीन रंग – हरा, सफेद तथा केसरिया होते हैं, इसलिए इसे 'तिरंगा' झण्डा कहते हैं।

इसी प्रकार 'सत्यवादी का अर्थ समझाने के लिए युधिष्ठिर तथा राजा हरिश्चन्द्र की कथा का उदाहरण दिया जा सकता है।

<u>NOTE</u>:- अध्यापक को चाहिए कि अर्थ बतलाकर वाक्यों में प्रयोग करने का अवसर दे जिससे विद्यार्थी अर्थ को समझते हुए वाक्य प्रयोग करना भी सीख ले।

② — प्रश्नोत्तर शिक्षण विधि :

- इस विधि में प्रवचन विधि की सहायता ली जाती है।
- सर्वप्रथम शिक्षक कठिन शब्दों का अर्थ छात्रों का अर्थ छात्रों से ही निकलवाने का प्रयास करता है; परन्तु जब किसी भी प्रविधि से अर्थ निकलवाने में सफल नहीं हो पाता है तब उसका अर्थ शिक्षक स्वयं बतलाता है।
- प्रश्नोत्तर शिक्षण विधि के सम्पादन में अनेक प्रविधियों की सहायता ली जाती है। इस शिक्षण विधि में शिक्षण सहायक सामग्री का विशेष विशेष महत्व है।

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त शिक्षक कुछ उदाहरण, पर्यायवाची, समानार्थी शब्द, अनुवाद तथा तुलना विधि की भी सहायता ली जाती है।

• इन प्रविधियों के उपयोग से छात्रों से कठिन शब्दों का अर्थ निकलवाने का प्रयास किया जाता है।

NOTE :-

इस विधि को सुकरात ने दिया। इस विधि की मुख्य अवधारणा यह है कि सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान बालक में समाहित है, परन्तु जन्म-मरण की प्रक्रिया में लिपट गया है। इसलिए प्रश्नों की सहायता से उसे खोलना है। शिक्षक बाहर से छात्रों को कोई ज्ञान नहीं दे सकता है। उसका कर्त्तव्य है उसके लिपटे ज्ञान को अपने प्रश्नों से उजागर कर दें।

③ व्याख्या शिक्षण - विधि :-

• इस शिक्षण विधि का उपयोग उच्च कक्षाओं के शिक्षण में किया जाता है।

• इस विधि के शिक्षण का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन अथवा समीक्षा, आलोचना व समालोचना करना है। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि उस प्रकरण पर अपने विचार भी प्रस्तुत कर सकें।

• व्याख्या शिक्षण विधि का अर्थ व्यापक है, इसमें लेखक अथवा रचनाकार का दार्शनिक पक्ष, उद्देश्य, उसके भावपक्ष, कलापक्ष आदि की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए व्यापक अर्थ बताने का प्रयास करना है जिससे छात्रों में अनुभूति का विकास होता है।

"सौन्दर्य की परख" अनेक प्रकार से की जाती है। बाह्य सौन्दर्य की परख, समझना तथा अभिव्यक्ति करना सरल है। जब रूप के साथ चरित्र का भी स्पर्श हो जाता है तब उसे + रसास्वादन की अनुभूति होती है। एक ही वस्तु मनोहर तथा सुन्दर कही जा सकती है, परन्तु सुन्दर वस्तु केवल इन्द्रियों को सन्तुष्ट करती है, जबकि मनोहर वस्तु चित्त को भी आनन्दित करती है।

इस दृष्टि से जयदेव का वसन्त चित्रण सुन्दर है तथा कालिदास का प्रकृति मनोहर है, क्योंकि उसमें चरित्र की प्रधानता है। 'सुन्दर' शब्द संकीर्ण है जबकि 'मनोहर' शब्द व्यापक और विस्तृत है।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त विवेचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि गद्य शिक्षण विधि जैसे- अर्थ बोध शिक्षण (प्राथमिक स्तर), प्रश्नोत्तर शिक्षण विधि (माध्यमिक स्तर), व्याख्या शिक्षण विधि (उच्च कक्षाओं के लिए) से उद्बोधन, छात्रों से कठिन शब्दों का अर्थ निकलवाने एवं अंत में व्याख्या शिक्षण विधि में लेखक अथवा रचनाकार का दार्शनिक पक्ष, उद्देश्य, उसके भावपक्ष, कलापक्ष आदि की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए व्यापक अर्थ बताने का प्रयास करना है जिससे छात्रों में अनुभूति का विकास होता है।

Scanned with CamScanner